International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in November 2024, ISSN -2393-8048

"माध्यमिक स्तर के किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशनात्मक एवं परामर्शात्मक अध्ययन"

हरीश कंसल, सहायक प्रवक्ता, शिक्षा विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर
बीनू यादव, शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर

सारांश

मध्यमिका स्तर के किशोरियों के स्कूलो में प्रभावी शिक्षा मुख्य मार्गदर्शन और परामर्श की एक महतवापुराण भूमिका निभाती है, ये छात्रों को सहायता और सहयोग प्रदान करता है।जिससे उन्हें अपना शैक्षिक, सामाजिक भावना और व्यक्तित्व कौशल विकास करने में मदद मिलती है। जिसे शैक्षिक उपलब्धि व्यक्तिगत विकास और समग्र कल्याण में सुधार होता है।

प्रस्तावना-

समाज में समायोजन करते हुए जीवन व्यतीत करना प्रत्येक व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता होती है। समायोजन की क्षमता एवं योग्यता का विकास करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति की योग्यता एवं अभिरूचि आदि के अनुकूल उसे अवसर प्रदान किया जाये। यदि विद्यालय का वातावरण बालक के परिवेश के स्तर से अधिक भिन्न है, तो उसे समायोजन करने में कठिनाई उत्पन्न होगी । पाठयक्रम का असंगत चयन एवं अयोग्य अध्यापकों का आधिक्य भी समायोजन से सम्बन्धित समस्याओं को उत्पन्न करता है। बालकों को पग-पग पर इस प्रकार के अनेकों सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक वातावरण के मध्य से गुजरता पड़ता है, जो उनकी प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल होता है। इस विषम परिस्थिति में बालकों को समायोजन की कला में दक्ष बनाने के लिए निर्देशन सेवाओं का उपयोग किया जाना अत्यन्त आवश्यक होता है।

अध्ययन की आवश्यकता, न्यायसंगतता तथा सार्थकता :

आवश्यकता - किशोरावस्था में बालकों में अनेक परिवर्तन होते हैं, इनकी वजह से किशोरो का जीवन तनाव, चिन्ता एवं संघर्ष से घिर जाता है। इस अवस्था बालकों को विद्यालय तथा सामाजिक वातावरण में भी समायोजन करने में कठिनाई उत्पन्न होती है। किशोरावस्था उम्र का वह पडाव है, जहाँ न तो बचपन रह जाता है और न ही वैचारिक परिपक्वता आती है, जिसके कारण बालकों में शक्ति का ज्वार सा उठता है। इस शक्ति का उचित उपयोग करने के लिए शिक्षा के स्वरूप पर ध्यान देना चाहिए. जो उनकी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि में सहायक हो।

अतः किशोरावस्था में बालक तथा बालिकाओं की समस्याओं को हल करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि उन्हें समायोजन स्थापित करने में क्या-क्या कठिनाईयाँ होती हैं। बालक तथा बालिकाओं के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए उनकी कठिनाईयों को ध्यान में रखकर उन्हें उचित निर्देशन प्रदान करना चाहिए। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध "माध्यमिक स्तर के किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशनात्मक एवं परामर्शात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की गयी है।

न्यायसंगतता - व्यक्ति के वांछित विकास के लिए समायोजन की क्षमता का विकास यथासमय किया जाना चाहिए यह निर्देशन की मान्यता है। इस गुण का विकास यदि व्यक्ति में न किया जाये तो न केवल व्यक्ति अपितु समाज की प्रगति पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। समायोजन की इस योग्यता का विकास केवल उसी दिशा में सम्भव है, जब प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता के अनुकूल अवसरों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हो तथा साथ ही विपरीत परिस्थितियों को समझने व उनका समाधान करने की क्षमता भी उसमें विकसित हो जाये। अतः इस दिशा में प्रस्तुत शोध "माध्यमिक स्तर के किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशनात्मक एवं परामर्शात्मक अध्ययन' न्यायसंगत है।

सार्थकता किशोरों का बौद्धिक स्तर छोटे बालकों के बौद्धिक स्तर से ऊँचा होता है, जिससे वे छोटे बालकों के साथ नहीं रहना चाहते हैं। वे वयस्कों के साथ रहना तथा उनकी तरह कार्य करना चाहते हैं परन्तु वयस्क लोग उन्हें अभी भी बालक समझते हैं। इस कारण ये किशोरों के मन में कुंठा उत्पन्न हो जाती है और वातावरण के साथ-साथ समायोजन बनाये रखना कठिन हो जाता है। व्यक्तिगत भिन्नता की अवधारणा को स्वीकार करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि बालकों के विकास के लिए निर्देशन का होना आवश्यक है। यह निर्देशन व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर दिया जाता है।

समस्या कथन:

बाल्यावस्था में मानव की समस्त कियाएँ वयस्क प्राणी की सहायता से सम्पन्न होती हैं किन्तु बाल्यावस्था पार करते ही वह किशोरावस्था में प्रवेश करता है। इस अवस्था में वह अनेक प्रश्नों, जिज्ञासाओं और समस्याओं में उलझ जाता है। सभी को इन जिज्ञासाओं तथा समस्याओं की अनुभूति एक समान नहीं होती है, इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी ने प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित कथन के रूप में समस्या का चयन किया है-

'माध्यमिक स्तर के किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशनात्मक एवं परामर्शात्मक अध्ययन"

मुख्य प्रत्ययों का अर्थ एवं परिभाषा:

प्रस्तुत शोध मानव विकास की किशोरावस्था पर आधारित है इसलिए अध्ययन में प्रयुक्त मुख्य प्रत्ययों का अर्थ एवं परिभाषाओं को समझने से पहले मानव विकास की अवस्थाओं पर प्रकाश डालना अति आवश्यक है, जो अग्रलिखित है-

मानव विकास की विभिन्न अवस्थाएँ : अनेक मनोवैज्ञानिकों ने मानव विकास को विभिन्न अवस्थाओं में विभाजित किया है। सामान्य रूप से मानव विकास को निम्नलिखित अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है-

(1) शैशवावस्था
(2) बाल्यावस्था
(3) किशोरावस्था
(4) प्रौढावस्था

किशोरावस्था की मुख्य विशेषताएँ:

किशोरावस्था को दबाव, तनाव एवं तूफान की अवस्था माना गया है। इस अवस्था में बालकों में अनेक परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों से सम्बन्धित कुछ विशेषताएँ निम्नांकित है-

(1) शारीरिक विकास
(2) मानसिक विकास
(3) घनिष्ठ व व्यक्तिगत मित्रता
(4) व्यवहार में भिन्नता
(5) स्थिरता व समायोजन का अभाव
(6) कामशक्ति की परिपक्वता
(7) रूचियों में परिवर्तन एवं स्थिरता
(8) समूह का महत्व
(9) विकास
(10) व्यवसाय का चुनाव

समायोजन के लक्षण :

1. परिस्थिति का ज्ञान, नियन्त्रण तथा अनुकूल आचरण ।
2. सन्तुलन ।
3. पर्यावरण तथा परिस्थिति से लाभ उठाना
4. सन्तुष्टि एवं सुख ।
5. सामाजिकता, आदर्श चरित्र, संवेगात्मक रूप से अस्थिर सन्तुलित तथा दायित्वपूर्ण ।
6. साहसी एवं समस्या का समाधान युक्त ।

इन लक्षणों के आधार पर गेट्स ने कहा है, "समायोजित व्यक्ति वह है, जिसकी आवश्यकताएँ एवं तृप्ति सामाजिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति के साथ संगठित हो। "

निर्देशन का अर्थ एवं परिभाषा:

जब कोई व्यक्ति किसी अन्य बालक या व्यक्ति को उसके जीवन से सम्बन्धित किसी समस्या को सुलझाने के लिए कोई सलाह देता है या सहायता करता है, तो सहायता करने की इस प्रक्रिया को निर्देशन कहते हैं। निर्देशन का जीवन में स्वतन्त्र कोई स्थान नहीं है। यह तो मात्र प्रकम है, जिसका उद्देश्य सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये बालक या व्यक्ति के विकास में सहायता पहुँचाना है। यह प्रक्रिया निरन्तर गतिशील रहती है। निर्देशन के द्वारा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, अपनी क्षमता, रूचि, योग्यता तथा

मानसिक स्तर का ज्ञान प्राप्त करता है। निर्देशन किसी भी की समस्या का समाधान स्वयं नहीं करता वरन् व्यक्ति को ही समस्या का समाधान करने योग्य बनाता है, जिससे वह निर्णय ले सके, निष्कर्ष निकाल सके तथा अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सके।

निर्देशन के प्रकार : रिस्क ने विद्यालयों में छात्रों को दिये जाने वाले विभिन्न प्रकार के निर्देशन और उनके कार्यक्रमों का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से किया है-

(1) शैक्षिक निर्देशन
(2) व्यावसायिक निर्देशन
(3) व्यक्तिगत निर्देशन
(4) स्वास्थ्य निर्देशन

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है-

माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा X में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में समायोजन हेतु निर्देशनात्मक एवं परामर्शात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ:

किसी भी समस्या के समाधान के सम्भावित रूप को परिकल्पना कहते हैं या किसी प्रश्न के सम्भावित उत्तर को परिकल्पना या उपकल्पना कहते हैं। परिकल्पना के बिना शोध कार्य को सही दिशा नहीं मिलती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के सम्बन्ध में की गयी परिकल्पनाओं का विवरण निम्नलिखित है-

(1) मुख्य परिकल्पना- शोध की मुख्य परिकल्पना के सन्दर्भ में 'शून्य परिकल्पना का चयन किया गया है। इसके अनुसार परिकल्पना इस प्रकार की गयी है-

किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(2) उप-परिकल्पनाएँ- शोध की उप-परिकल्पनाओं के अन्तर्गत निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है-

i. किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों का दृष्टिकोण सकारात्मक है।

ii. किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी छात्रों का दृष्टिकोण सकारात्मक है।

iii. किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्रों का दृष्टिकोण सकारात्मक है।

iv. किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी छात्रों तथा ग्रामीण छात्रों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

V. किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं का दृष्टिकोण सकारात्मक है ।

vi. किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्कताओं पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी छात्राओं का दृष्टिकोण सकारात्मक है। किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राओं का दृष्टिकोण सकारात्मक है।

viii. किशोरावस्था में समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी छात्राओं तथा ग्रामीण छात्राओं के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना के चर:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिकल्पनाओं का निर्माण करते समय दो प्रकार के चरों का निर्धारण उनकी भूमिकाओं के आधार पर किया गया है। परिकल्पना के प्रमुख चर निम्नलिखित हैं-

• स्वतन्त्र चर- किशोरावस्था के छात्र-छात्राएँ' परिकल्पना में स्वतन्त्र चर की भूमिका में हैं। यह वातावरण में क्रियाशील हैं तथा इनका अध्ययन किया गया है।

• आश्रित चर- समायोजन हेतु निर्देशन की आवश्यकताओं पर छात्र-छात्राओं का 'दृष्टिकोण'आश्रित चर की भूमिका में है। अध्ययन में परीक्षण द्वारा छात्र-छात्राओं के 'दृष्टिकोण' के आधार पर ही उनका अध्ययन किया गया है।

अध्ययन की परिसीमाएँ:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विस्तार की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए निम्नानुसार परिसीमन किया गया है- इस शोध अध्ययन के क्षेत्र को उ०प्र० के जनपद गौतम बुद्ध नगर के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।

नोएडा कन्या इण्टर कॉलेज, भंगेल, गौतम बुद्ध नगर ।

■ आदर्श भारतीय इण्टर कॉलेज, तिलपता, गौतम बुद्ध नगर ।

■ चौधरी लक्ष्मी नरायण, इण्टर कॉलेज, खेरली, गौतम बुद्ध नगर ।

■ कुमारपब्लिक स्कूल, सूरजपुर, गौतम बुद्ध नगर ।

इस शोध अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा X में अध्ययनरत किशोरावस्था के अन्तर्गत आने वाले शहरी तथा ग्रामीण छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

सन्दर्भसूची

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली: एम०एच०आर०डी० ।
- एन०सी०ई०आर०टी० (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली एन०सी०ई०आर०टी०
- अली, ज०, (2000) स्टडी ऑफ सेल्फ- कान्त्रोष्ट, बॉडी इमेज एडजस्टमेन्ट एण्ड परफार्मेन्स ऑफ हाकी प्लेयर्स, पी-एच.डी फिजीकल एजूकेशन, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी |
- गुप्ता, ए० के० (2010) ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप ऑफ क्रियेटीविटी विध सेल्फ कान्सेप्ट एमंग द स्कूल गोइंग चिल्ड्रेन ऑफ 12 इन जम्मू सिटी, पी-एच.डी. एजूकेशन पंजाब यूनिवर्सिटी |
- श्रीवास्तव, एम० कु0 (2013) शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन |
- श्रीवास्तव, आर0 (2015) ए स्टडी ऑफ सोशियो साइकोलोजिकल करेक्टरिस्टिक्स ऑफ क्लास स्टूडेन्ट्स ऑफ नवोदय विद्यालयाज, पी०एचडी० लखनऊ विश्वविद्यालय |
- गुप्ता एस०पी० (2017) "आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
- बालिया, शिरीष (2018) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ।
- सिंह, अरुण कुमार, (2019) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, पटनाः मोतीलाल, बनारसी दास ।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2019) शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली।
- अस्थाना, श्रीवास्तव एवं अस्थाना (2020) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन ।
- लाल, आर० बी० कान्त, के0 (2020) समकालीन भारत और शिक्षा, मेरठ आर०लाल बुक डिपो ।
- राय, पारसनाय (2020) अनुसंधान परिचय प्रकाशक लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।